निमाड़ नामकरण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

शोधपत्र

*डॉ. कृष्णा मोरे

मध्यप्रदेश के पश्चिम अंचल में स्थित एक हिस्सा निमाड़ कहलाता हैं। पौराणिक काल में अनूप देश कहलाने वाला यह एक भाग था,जिसका प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक का इतिहास महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी रहा हैं। निमाड़ के हृदय में नर्मदारूपी अम तसरिता प्रवाहित है। यह क्षेत्र प्रारम्भ से ही भौगोलिक दृष्टि से उत्तर एवं दक्षिण भारत के बीच स्थित होने के कारण कला एवं स्थापत्य की दृष्टि से बहुत महत्व का रहा है।

शासन की दृष्टि से वर्तमान निमाड़ चार जिलों में विभाजित हैं। इनमें से एक भाग खण्ड़वा एवं बुरहानपुर, पूर्वी निमाड़ और दूसरा भाग खरगोन एवं बड़वानी, पश्चिम निमाड़ कहलाता हैं। प्राचीन और मध्यकाल में निमाड़ को मालवा के अन्तर्गत माना जाता था।

निमाड़ नाम का इतिहास भी अत्यन्त विवादपूर्ण हैं। पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय के अनुसार–''निमाड़ नाम का अनुमान हैं कि उत्तर भारत और दक्षिण भारत का संधि स्थल होने से आर्य, अनार्यों की मिश्रित भूमि रहा होगा और इसी नाते इसका नाम 'निमार्य' (नीम–आर्य) पड़ा होगा। नीम का अर्थ भी निमाड़ी में 'आधा' होता हैं। इसी 'निमार्य' का बदलते–बदलते 'निमार' और 'निमाड़' हो जाना स्वाभाविक हैं।''

दूसरा कारण यह भी हो सकता हैं कि निमाड़ मालवा से नीचे की ओर बसा हैं। मालवा से निमाड़ की ओर आने में निरन्तर नीचे की ओर उतरना होता है। इस तरह 'निम्नगामी' होने से इसका नाम 'निमानी' और उससे बदलकर 'निमारी' और 'निमाड़ी' हो गया होगा। लेकिन इसका वास्तविक अर्थ इसी में छुपा हुआ हैं चूंकि निमाड़ी में 'नि' का अर्थ 'नीची' और 'माड़ी' का अर्थ ' माँ की गोद होता अर्थात्''इसकी हमेशा 'प्रांत' के रूप में स्वीकरोक्ति होती रही है और कभी भी ईस्लामिक रियासत के भाग का नाम नहीं दिया गया है।

मेरे विचारानुसार इसके हिन्दू शब्द होने में तनिक भी संदेह नहीं है।'' निमाड़ में प्रवेश करने वाला प्रथम मुसलमान शासक सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था, जो सन् 1291ई. में यहॉ आया। यदि निमाड़ मुसलमानी नाम होता तो इस भाग का यह नाम सन् 1291ई. के पश्चात् ही पड़ना चाहिए था जबकि 11वीं शताब्दी में आने वाले अरब यात्री अलबरूनी ने भी अपने यात्रा वर्णन में इस प्रदेश का नाम 'निमाड़ प्रान्त' लिखा है। कुछ लोग इसका पूर्व नाम 'नीमवाड़' बतलाते हैं, जिसका अर्थ हैं नीम (एक वृक्ष) का प्रदेश। इस प्रदेश में नीम के अधिक वृक्ष देखकर इसके नामकरण के संबंध में यह अनुमान किया जाता है।

यद्यपि यह तर्क अधिक पुष्ट हैं, फिर भी संतोषजनक नहीं जान पड़ता। इस संबंध में भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् की कुछ पंक्तियॉ भी विचारणीय हैं। विन्ध्य के समीप जाने पर लक्ष्मण ने सीता से कहा–

'एष विध्नयाटवीमुखे विरोधसरोधः।'

अतएव धरती माता के निम्नांचल में बसा होने से ही इसका नाम ''निमाड़'' पडा होगा। कुछ लोग फारसी के 'नीम' शब्द से निमाड़ बनना बतलाते हैं। उनके मतानुसार फारसी में 'नीम' का अर्थ 'आधा' होता हैं।

इस भू–भाग ने नर्मदा नदी का आधा भाग अपने आंचल में छिपा रखा हैं, इसलिए इसे निमाड़ कहते हैं किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं हैं। एक तो यह नर्मदा के उद्‌गम स्थान की अपेक्षा मुख से अधिक निकट हैं और दूसरे 'नीम' शब्द के आगे 'आड़' प्रत्यय कैसे लग गया और यह किसी अर्थ में स्पष्ट नहीं है। अतः यह मत मान्य नहीं हैं।

फोर्सिथ ने भी अपनी सेटलमेन्ट रिपोर्ट में 'निमाड़' नाम पडने के इस तर्क का खण्ड़न किया है। वे 'निमाड़' फारसी नहीं पर हिन्दू (हिन्दी) शब्द मानते हैं।

उन्होंने लिखा है :–

"It has always been talked of as a "Prant" and never gave a name to any mohamedan territorial division. I think there is no doubt to its being a Hindu term."

यह विन्ध्य की उपत्यका हैं, जहॉ हमें विरोध ने अवरोध किया था। विरोध का स्मरण आते ही सीताजी के कोमलहृदय पर आघात हुआ। यह देखकर श्रीराम ने कहाः–

'एतानितानि गिरि निर्झरिणीतटेशु,
वेश्वानसाश्रिततरूणि तपोबनानि।
येश्वातिथेयपरमाः यमिनो भजन्ते।

* 3, न्यू निम्बार्क कॉलोनी, सेन्धवा (जिला-बड़वानी) मध्यप्रदेश

नीवारमुष्टिपचना गृहिणों गृहाणि।।'

—प्रथमांक—25

उक्त लोक की अंतिम पंक्ति में प्रयुक्त 'नीवार' शब्द से तात्पर्य हैं जंगल में उत्पन्न होने वाले एक प्रकार के चावल से है जिसे अरण्य में वास करने वाले ऋषिमुनि सेवन करते थे।

यह जिस स्थान का वर्णन हैं, वह विन्ध्य की उपत्यका हैं, जहॉ आज हम निमाड़ भाग को बसा पाते है। अतः यह भी संभव हैं कि इस भाग में उत्पन्न होने वाले इस 'नीवार' शाली की बहुतायत से इस भू—भाग का नाम पहले 'नीवार' पड़ा हो और कुछ समय के पश्चात् 'निमाड़' अथवा 'नीमाड़' कहलाने लगा हो।

वस्तुतः निमाड़ मालवा राज्य का दक्षिणी भाग हैं, जिसे हम 'निम्न भाग' भी कह कह सकते हैं। 'वाड़' का अर्थ 'स्थान' हैं, जैसा कि हम मारवाड़, मेवाड़, काठियावाड़ आदि नामों से देखते है।

अतः इसके पूर्व नाम 'निम्नवाड़' होना चाहिए, जो लोकवाणी में 'निमाड़' हो गया हैं।

प्राकृतिक रचना की दृष्टि से भी यह भाग अवश्य ही उत्तरी भाग की तुलना में समुद्रतट से नीचा हैं। इस भू—भाग से लगे भाग को मालवी भाषा में निम्न भाग को 'निमानी' भी कहते हैं। यह देखते हुए 'निम्नवाड़' से ही निमाड़ नाम पड़ने की अधिक संभावना जान पड़ती हैं।

निमाड़ का सांस्कृतिक इतिहास सम द्ध और गौरवशाली रहा हैं। पौराणिक नायकों से लगाकर अनेक गौरवशाली वंशों का शासन यहॉ रहा हैं, जिन्होंने निमाड़ की संस्कृति को बहुत गहरे तक प्रभावित किया हैं।

निमाड़ की भूमि एक ऐसे स्थान पर हैं, जहॉ कई जातियों और जनजातियों की संस्कृतियॉ आयी और गयी। आर्य—अनार्य, शक, सीथियन, सातवाहन, राजपूत मुगल, मराठा आदि संस्कृतियों के स्मृति चिन्ह यहॉ के जन—जीवन,कला और वाचिक परम्परा के अवशेष के रूप में आज भी देखे जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उपाध्याय,रामनारायण : निमाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन,नागपुर,1980
2. Forsyth Settlement Report (1864),Para-1
3. Mount Stuart Emhinstone : History of India (1889)
4. हंस,डॉ.कृष्णलाल : निमाड़ी और उसका साहित्य, हिन्दुस्तानी अकादमी,उ.प्र. इलाहाबाद,1960
5. निरगुणे,वसन्त : निमाड़ी संस्कृति और साहित्य, म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद, भोपाल
6. निमाड़ सेटिलमेन्ट रिपोर्ट (1868)
7. निमाड़ जिला गजटियर।